सन्दर्भ-ग्रन्थ

अग्नि : श्री अग्निपुराणम्, हिन्दी अनुवाद सहित, दो खण्डों में, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग १९८६। पुस्तक में दूसरे खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

अर्थशास्त्र : कौटिलीयं अर्थशास्त्रम्, प्राच्यविद्यासंशोधनालय ग्रन्थमाला १५८, मैसूर १९८६।

आपस्तम्ब : आपस्तम्ब धर्मसूत्रम्, श्रीमद्धरदत्तमिश्रविरचितया उज्ज्वलाख्यया वृत्त्या संवलितम्, काशी संस्कृत ग्रन्थमाला ९३, चौखम्भा, वाराणसी १९८३।

उत्तररामचरित : उत्तररामचरितम्, महाकवि श्रीभवभूतिप्रणीतं नाटकरत्नम्, श्रीबालमनोरमा शृङ्खला, ५० एवं ५१, मद्रास १९६२।

ऋक्संहिता : ऋग्वेदसंहिता, श्रीमत्सायणाचार्यविरचितभाष्यसमेता, तिलक-महाराष्ट्र-विद्यापीठ-शाखाभूत-वैदिक संशोधनमण्डलेन प्रकाशिता, पाँच खण्डों में, क्रमशः १९३३, १९३६, १९४१, १९४६ एवं १९५१ में पुणे से प्रकाशित। पुनर्मुद्रण, पुणे १९८३। पुस्तक में चौथे खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

कामन्दकी : कामन्दकीय नीतिसारः, जयमङ्गला-उपाध्यायनिरपेक्षाभ्यां संवलितः, आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावलिः १३६, खण्ड १, पुणे १९७७ एवं खण्ड २, पुणे १९८२। पुस्तक में पहले खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

गौतम : गौतमधर्मसूत्रम्, मस्करि भाष्योपेतम्, राजकीय प्राच्यविद्या पुस्तकालय ग्रन्थमाला ५०, मैसूर १९१७।

चतुर्वर्गचिन्तामणि : चतुर्वर्गचिन्तामणिः, श्रीहेमाद्रिविरचितः, आसियाटिक्-सोसाइटि-नाम्न्या संस्थया प्रकाशितस्य प्रतिरूपम्, ६ खण्डों में, चौखम्भा, वाराणसी १९८५। पुस्तक में तीसरे खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

तैत्तिरीयब्राह्मण : कृष्णयजुर्वेदीयं तैत्तिरीयब्राह्मणम्, श्रीमत्सायणाचार्यविरचित भाष्यसमेतम्, आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावलिः ३७, तीन खण्डों में, क्रमशः १८९८, १९१८ एवं १९१८ में पुणे से प्रकाशित। पुस्तक में दूसरे खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

Centre for Policy Studies *www.cpsindia.org*

तैत्तिरीयारण्यक : कृष्णयजुर्वेदीयं तैत्तिरीयारण्यकम्, श्रीमत्सायणाचार्यविरचित भाष्यसमेतम्, आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावलिः ३६, २ खण्डों में, पुणे १९०३। पुनर्मुद्रण १९८१। इस ग्रन्थ में दोनों खण्डों के पृष्ठों को इकट्ठे एक ही क्रम में गिना गया है। अतः पुस्तक में खण्ड का सन्दर्भ नहीं दिया गया।

तैत्तिरीयोपनिषद् : तैत्तिरीयोपनिषद्, सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित, गीताप्रेस, गोरखपुर १९३६। पुनर्मुद्रण, गोरखपुर १९९३।

पद्म : श्रीपद्मपुराणम्, खेमराज श्रीकृष्णदास सम्पादितस्य मुम्बई श्रीवेङ्कटेश्वरस्टीम् मुद्रणालयेन प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्, ४ खण्डों में, नाग प्रकाशन, दिल्ली १९८४। पुस्तक में प्रथम खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

पराशर : पराशरस्मृतिः, श्रीमत्सायणाचार्यकृतव्याख्यासहिता, दि एशियाटिक सोसाइटि, कलकत्ता से दो खण्डों में क्रमशः १८९३ एवं १८९९ में प्रकाशित। पुनर्मुद्रण, कलकत्ता १९७३। पुस्तक में प्रथम खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

भविष्य : श्रीभविष्यमहापुराणम्, खेमराज श्रीकृष्णदास सम्पादितस्य मुम्बई श्रीवेङ्कटेश्वरस्टीम् मुद्रणालयेन प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्, २ खण्डों में, नाग प्रकाशन, दिल्ली १९८४। पुस्तक में दूसरे खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

मणिमेखलै : मणिमेखलै, शैवसिद्धान्त प्रेस, मद्रास १९७१।

मत्स्य : श्रीमत्स्यमहापुराणम्, खेमराज श्रीकृष्णदास सम्पादितस्य मुम्बई श्रीवेङ्कटेश्वरस्टीम् मुद्रणालयेन प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्, नाग प्रकाशन, दिल्ली १९८४।

मनुस्मृति : मनुस्मृतिः, मेधातिथि - सर्वज्ञनारायण - कुल्लूक - राघवानन्द - नन्दन - रामचन्द्र - मणिराम - गोविन्दराज - भारुचि इति व्याख्याननवकेन समलङ्कृता, पाँच खण्डों में क्रमशः भारतीय विद्याश्रेणी ग्रन्थ २९, ३३, ३७, ३८ एवं ३९ के रूप में मुम्बई से १९७२, १९७५, १९७८, १९८५ एवं १९८२ में प्रकाशित। पुस्तक में दूसरे खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

महाभारत : श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत महाभारत, सरल-हिन्दी अनुवाद सहित, छः खण्डों में, गीताप्रेस, गोरखपुर १९५५। पुनर्मुद्रण १९८७। इस ग्रन्थ में छहों खण्डों के पृष्ठों को इकट्ठे एक ही क्रम में गिना गया है। अतः पुस्तक में खण्ड का सन्दर्भ नहीं दिया गया। सन्दर्भ देते हुए पृष्ठसंख्या से पूर्व सर्वप्रथम पर्व का नाम और तदुपरान्त क्रमशः अध्याय एवं श्लोक की क्रमसंख्या

दी गयी है। गीताप्रेस वाले ग्रन्थ में महाभारत के दक्षिणभारतीय पाठ के श्लोकों की गिनती नहीं की गयी। पुस्तक में इन श्लोकों का सन्दर्भ देते हुए केवल पर्व के नाम एवं अध्याय की क्रमसंख्या का उल्लेख किया गया है।

याज्ञवल्क्य : याज्ञवल्क्यस्मृतिः, विज्ञानेश्वरप्रणीतया मिताक्षराव्याख्यया 'प्रकाश' - हिन्दी व्याख्यया च विभूषिता, काशी संस्कृत ग्रन्थमाला १७८, चौखम्भा, वाराणसी १९८३।

रघुवंश : रघुवंशम्, सञ्जीवन्या समेतम्, मुम्बई १८९७। पुनर्मुद्रण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली १९८२।

राजनीति : विद्वद्वरश्रीचण्डेश्वर विरचितः राजनीतिरत्नाकरः, 'प्रकाश' - हिन्दी - व्याख्योपेतः, काशी संस्कृत ग्रन्थमाला १९६, चौखम्भा, वराणसी १९७०।

रामायण : श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, हिन्दी भाषान्तर सहित, दो खण्डों में, गीताप्रेस, गोरखपुर १९६०। पुनर्मुद्रण, गोरखपुर १९९३। इस ग्रन्थ के दोनों खण्डों के पृष्ठों को इकट्ठे एक ही क्रम में गिना गया है। अतः पुस्तक में खण्ड का सन्दर्भ नहीं दिया गया। सन्दर्भ देते हुए पृष्ठसंख्या से पूर्व काण्ड का नाम और तदुपरान्त क्रमशः सर्ग एवं श्लोक की क्रमसंख्या दी गयी है।

वराह : श्रीवराहपुराणम्, आङ्ग्लभाषानुवाद सहितम्, सर्वभारतीय काशिराजन्यासः, वाराणसी १९८१।

विष्णु : श्रीविष्णुपुराण, मूल श्लोक और हिन्दी-अनुवाद सहित, गीताप्रेस, गोरखपुर १९३३। पुनर्मुद्रण १९८८।

विष्णुधर्मोत्तर : श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणम्, खेमराज श्रीकृष्णदास सम्पादितस्य मुम्बई श्रीवेङ्कटेश्वरस्टीम् मुद्रणालयेन प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्, २ खण्डों में, नाग प्रकाशन, दिल्ली १९८५। पुस्तक में प्रथम खण्ड का ही सन्दर्भ आया है।

शतपथ : श्रीमद्वाजसनेयिमाध्यन्दिनशतपथब्राह्मणम्, श्रीमत्त्रयी भाष्यकारसायणाचार्य विरचित वेदार्थप्रकाशाख्यभाष्यसमेतम्, पुणे १९३९। पुनर्मुद्रण, पाँच खण्डों में, नाग प्रकाशन, दिल्ली १९९०। इस ग्रन्थ के प्रत्येक खण्ड के अनेक भाग हैं और प्रत्येक भाग के पृष्ठों को पृथक्-पृथक् गिना गया है।

हुयेन-त्साङ्ग : द लाइफ आफ हुयेन-त्साङ्ग बाय शमनस हुई-ली एण्ड येन-त्साङ्ग, ट्रांसलेटड इनटू इंग्लिश बाय सेमुअल बील, ट्यूबनेर, लन्दन १८८८।